B.A. History

Part - III / Paper - VI

By: DR ANAND KUMAR SINGH, ASSISTANT PROF., Dept. of HISTORY, JAWAHAR LAL NEHRU COLLEGE, DEHRI-ON-SONE

TOPIC: बंगाल में द्वैध शासन

द्वैध शासन को समझने के लिए पहले दीवानी और निजामत को समझना आवश्यक है। मुगल काल में प्रांतीय प्रशासन में दो प्रकार के अधिकारी होते थे जिनमें सूबेदार जिसे निजामत भी कहा जाता था, का कार्य सैनिक अभिरक्षा, पुलिस और न्याय प्रशासन से जुड़ा था। दूसरा प्रांतीय स्तर पर दे० पद दीवान का था, जो राजस्व एवं वित्त व्यवस्था को देख-रेख करता था। ये दोनों अधिकारी एक-दूसरे पर नजर रखते थे तथा मुगल बादशाह के प्रति उत्तरदायी थे।

इलाहाबाद की संधि के बाद अंग्रेजों को 26 लाख रुपये वार्षिक देने के बदले 'दीवानी' का अधिकार तथा 53 लाख रु बंगाल के नवाब को देने पर निजामत का अधिकार प्राप्त हुआ।

दीवानी और निजामत दोनों अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद ही कम्पनी ने बंगाल में द्वैध शासन की शुरुआत की।

द्वैध शासन का जनक लियो कार्टिस को माना जाता है। द्वैध शासन जिसकी शुरुआत बंगाल में 1765 ई. से माना जाता है, के अन्तर्गत कम्पनी ने दीवानी और निजामत के कार्यों के निष्पादन भारतीयों के माध्यम से करती थी, लेकिन वास्तविक शक्ति कम्पनी के पास होती थी। कम्पनी और नवाब दोनों द्वारा प्रशासन की व्यवस्था के ही बंगाल में द्वैध शासन रखा गया है, जिसकी विशेषता थी जिम्मेदायित्व रहित अधिकार और अधिकार रहित जिम्मेदायित्व।

शीघ्र ही बंगाल में द्वैध शासन के दुष्परिणाम देखने को मिले। समूचे बंगाल में अराजकता अव्यवस्था तथा भ्रष्टाचार का माहौल बन गया। व्यापार और वाणिज्य का पतन हुआ, व्यापारियों की स्थिति भिखारियों जैसी हो गई, समृद्ध और विकसित उद्योग विशेषतः रेशम और कपड़ा उद्योग नष्ट हो गए, किसान भी भयानक गरीबी के शिकार हो गए।

फरवरी, 1765 में क्लाइव ने बंगाल के नवाब नज्मुद्दौला से संधि की, जिसकी शर्तें इस प्रकार थी - बंगाल में न्यायालयिक अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार कम्पनी को होगा। साथ ही नवाब की सेना को लगभग समाप्त ही कर दिया गया।

बंगाल के नवाब के साथ सं
के बाद बंगाल में द्वैध शासन की शुरुआत हुई
कम्पनी को मुगल सूबेदार द्वारा इलाहाबाद की सं
से बंगाल, बिहार उड़ीसा की दीवानी तथा बंगाल
के नवाब के साथ सम्पन्न संधि से निजामत का
अधिकार प्राप्त हो गया। द्वैध शासन के समय ही
बंगाल में 1770 में भयंकर अकाल पड़ा जिसमें करी
एक करोड़ लोग भूखमरी के कारण मृत्यु के शिकार
हो गए। द्वैध शासन के समय बंगाल से 1766-6
के बीच 2,24,67,500 रु की वसूली हुई, इससे पूर्व
यह वसूली मात्र 80 लाख थी।

बंगाल में द्वैध शासन 1772 तक
प्रचलन में रही। लार्ड कार्नवालिस ने इंग्लैण्ड की
संसद में द्वैध शासन के बारे में कहा कि "मैं पूर्ण
विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि विश्व में कोई भी
ऐसी सभ्य सरकार नहीं रही जो इतनी भ्रष्ट, विश्वासघाती
और लोभी हो, जितना की भारत में कम्पनी की सरकार।

— o —